८. अभयराजकुमारसुत्तं

१. ननु तथागतो अप्पियं भासेय्य

१. एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दक- [N.67] निवापे। अथ खो अभयो राजकुमारो येन निगण्ठो नातपुत्तो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा निगण्ठं नातपुत्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो अभयं राजकुमारं निगण्ठो नातपुत्तो एतदवोच—"एहि त्वं, राजकुमार, समणस्स गोतमस्स वादं आरोपेहि। एवं ते कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छिस्सति—'अभयेन राजकुमारेन समणस्स [B.55] गोतमस्स एवं महिद्धिकस्स एवं महानुभावस्स वादो आरोपितो' " ति।

"यथा कथं पनाहं, भन्ते, समणस्स गोतमस्स एवं महिद्धिकस्स एवं महानुभावस्स वादं आरोपेस्सामी" ति?

"एहि त्वं, राजकुमार, येन समणो गोतमो तेनुपसङ्कम; उपसङ्कमित्वा समणं गोतमं एवं वदेहि—'भासेय्य नु खो, भन्ते, तथागतो तं वाचं या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा' ति? सचे ते समणो गोतमो एवं पुट्ठो एवं ब्याकरोति—'भासेय्य, राजकुमार तथागतो तं वाचं या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा' ति, तमेनं त्वं एवं वदेय्यासि—'अयं किं चरहि ते, भन्ते, पुथुज्जनेन नानाकरणं? पुथुज्जनो हि तं वाचं भासेय्य या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा' ति! सचे पन ते समणो गोतमो एवं पुट्ठो एवं ब्याकरोति—[R.393] 'न, राजकुमार, तथागतो तं वाचं भासेय्य या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा' ति, तमेनं त्वं एवं वदेय्यासि—'अथ किं चरहि ते, भन्ते, देवदत्तो ब्याकतो—आपायिको देवदत्तो, नेरयिको देवदत्तो, कप्पट्ठो देवदत्तो, अतेकिच्छो देवदत्तो ति? ताय च पन ते वाचाय

---

८. अभयराजकुमारसूत्र

क्या तथागत अप्रिय भी बोलते हैं?

१. ऐसा मैंने सुना है (कि) एक समय भगवान् (बुद्ध) राजगृह स्थित वेणुवन के कलन्दकनिवाप में साधनाहेतु ठहरे हुए थे। तब कोई अभय नामक राजकुमार जहाँ निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र थे वहाँ पहुँचा; वहाँ पहुँचकर, निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र को प्रणाम कर, एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे अभय राजकुमार से निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र यों बोले—"जाओ, राजकुमार! तुम श्रमण गौतम से शास्त्रार्थ करो। ऐसा करने से तुम्हारी लोक में प्रशंसा फैलेगी, तुम्हारा नाम भी ऊँचा होगा कि राजकुमार अभय ने श्रमण गौतम जैसे पहुँचे हुए ज्ञानी महानुभाव सन्त से शास्त्रार्थ किया।"

भन्ते! मैं ऐसे पहुँचे हुए ज्ञानी, महानुभाव सन्त से कैसे शास्त्रार्थ कर पाऊँगा?"

"राजकुमार! तुम श्रमण गौतम के पास जाओ तो! जाकर उनसे यों बोलना (पूछना)—'भन्ते! क्या आप ऐसी वाणी भी बोलते हैं, जो दूसरों को कष्टकर हो या उन्हें अप्रिय लगे?' ऐसा पूछे जाने पर यदि वह श्रमण गौतम यह कहे—'हाँ, राजकुमार! मैं ऐसी वाणी भी बोलता हूँ' तो तुम उनसे फिर यों कहना—'तब भन्ते! आप में और किसी साधारण (=पृथग्जन) में क्या भेद है; क्योंकि पृथग्जन भी वैसी ही वाणी बोलता रहता है, जो दूसरों को कष्टकर या अप्रिय हो।' और यदि वह श्रमण गौतम तुमसे यह कहे—'नहीं राजकुमार! तथागत ऐसी वाणी का प्रयोग नहीं करते, जो दूसरों को कष्टकर एवं अप्रिय हो।' तो तुम यह कहना—'तो, भन्ते! देवदत्त के विषय में आप ऐसा क्यों कहते

[N.68] देवदत्तो कुपितो अहोसि अनत्तमनो' ति। इमं खो ते, राजकुमार, समणो गोतमो उभतोकोटिकं पञ्हं पुट्ठो समानो नेव सक्खिति उग्गिलितं, नापि ओगिलितुं। सेय्यथापि नाम पुरिसस्स अयोसिङ्घाटकं कण्ठे विलग्गं, सो नेव सक्कुणेय्य उग्गिलितुं न सक्कुणेय्य ओगिलितुं; एवमेव खो ते, राजकुमार, समणो गोतमो इमं उभतोकोटिकं पञ्हं पुट्ठो समानो नेव सक्खिति उग्गिलितुं न सक्खिति ओगिलितुं'' ति।

''एवं, भन्ते'' ति खो अभयो राजकुमारो निगण्ठस्स नातपुत्तस्स पटिस्सुत्वा उट्ठायासना निगण्ठं नातपुत्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि।

२. एकमन्तं निसिन्नस्स खो अभयस्स राजकुमारस्स सुरियं उल्लोकेत्वा एतदहोसि— [B.56] ''अकालो खो अज्ज भगवतो वादं आरोपेतुं। स्वे दानाहं सके निवेसने भगवतो वादं आरोपेस्सामी'' ति भगवन्तं एतदवोच—''अधिवासेतु मे, भन्ते, भगवा स्वातनाय अत्तचतुत्थो भत्तं'' ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन। अथ खो अभयो राजकुमारो भगवतो अधिवासनं विदित्वा उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अथ खो भगवा तस्सा रत्तिया अच्चयेन पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन अभयस्स राजकुमारस्स निवेसनं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो अभयो राजकुमारो भगवन्तं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेसि सम्पवारेसि। अथ खो अभयो राजकुमारो भगवन्तं भुत्ताविं ओनीतपत्तपाणिं अञ्ञतरं नीचं आसनं गहेत्वा एकमन्तं निसीदि।

रहते हैं—देवदत्त की दुर्गति होगी, वह नरक में पड़ेगा और वहाँ अल्प भर कष्ट भोगेगा, अब उसके पापरोग की कोई ओषधि नहीं है? क्योंकि इस तरह की बात कहने से वह देवदत्त दुःखी होता है, कुद्ध होता है।' राजकुमार! इस तरह तुम्हारी इन दोनों ओर की बातों में फँसा हुआ, यह श्रमण गौतम न तो उगल सकेगा (सही उत्तर दे सकेगा) और न निगल सकेगा (न तुम्हारी बात को मान सकेगा)। जैसे किसी पुरुष के गले में कोई लोहे की कील जाकर अटक जाय, उसे वह न उगल सके और न निगल सके; उसी तरह, राजकुमार! तुम्हारी इन दोनों तरफ की बातों में फँसा हुआ वह श्रमण गोतम न तो उगल सकेगा और न निगल सकेगा।''

''ठीक है, भन्ते!''—कहकर अभय राजकुमार, निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र को अपनी स्वीकृति दे, आसन से उठ, उन्हें प्रणाम प्रदक्षिणादि कर, जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचा; पहुँचकर भगवान् को प्रणाम कर, एक ओर बैठ गया।

२. एक ओर बैठे राजकुमार के मन में उस समय के सूर्य की स्थिति देखकर (समय का अनुमान लगाते हुए), यह विचार आया—''अब आज भगवान् से वाद करना उचित नहीं होगा। क्यों न मैं कल अपने घर पर (भोजन के समय) भगवान् से यह वाद करूँ''—यह सोच, उसने भगवान् से यों निवेदन किया—''भन्ते! आप कल अपने सहित चार भिक्षुओं के साथ मेरे घर भोजन करने का निमन्त्रण स्वीकार करें।'' भगवान् ने चुप रहकर (यह निमन्त्रण) स्वीकार कर लिया। इसके बाद अभय राजकुमार भगवान् की स्वीकृति जान, आसन से उठ, भगवान् को प्रणाम प्रदक्षिणादि कर अपने घर चला गया।

इसके बाद भगवान्, उस रात्रि के बीत जाने पर, प्रातःकाल पहन कर, पात्र चीवर ले,

३. एकमन्तं निसिन्नो खो अभयो राजकुमारो भगवन्तं एतदवोच—''भासेय्य नु खो, भन्ते, तथागतो तं वाचं या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा'' ति?

''न ख्वेत्थ, राजकुमार, एकंसेना'' ति।

''एत्थ, भन्ते, अनस्सुं निगण्ठा'' ति।

''किं पन त्वं, राजकुमार, एवं वदेसि—'एत्थ, भन्ते, अनस्सुं [N.69. R.394] निगण्ठा' '' ति?

''इधाहं, भन्ते, येन निगण्ठो नातपुत्तो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा निगण्ठं नातपुत्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिं। एकमन्तं निसिन्नं खो मं, भन्ते, निगण्ठो नातपुत्तो एतदवोच—'एहि त्वं, राजकुमार, समणस्स गोतमस्स वादं आरोपेहि। एवं ते कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छिस्सति—अभयेन राजकुमारेन समणस्स गोतमस्स एवं महिद्धिकस्स एवं महानुभावस्स वादो आरोपितो' ति। एवं वुत्ते, अहं, भन्ते, निगण्ठं नातपुत्तं एतदवोचं—'यथा कथं पनाहं, भन्ते, समणस्स गोतमस्स एवं महिद्धिकस्स एवं महानुभावस्स वादं आरोपेस्सामी' ति?

'एहि त्वं, राजकुमार, येन समणो गोतमो तेनुपसङ्कम; उपसङ्कमित्वा समणं गोतमं एवं वदेहि—भासेय्य नु खो, भन्ते, तथागतो तं वाचं या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा ति? सचे ते समणो गोतमो एवं पुट्ठो एवं ब्याकरोति—भासेय्य, राजकुमार, तथागतो तं वाचं या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा ति, तमेनं त्वं एवं वदेय्यासि—अथ किं चरहि ते, भन्ते, पुथुज्जनेन नानाकरणं? पुथुज्जनो पि हि तं वाचं भासेय्य या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा ति। सचे पन ते समणो गोतमो एवं पुट्ठो एवं ब्याकरोति—न, राजकुमार, तथागतो तं वाचं भासेय्य या सा वाचा परेसं अप्पिया अमनापा ति, [B.57] तमेनं त्वं एवं वदेय्यासि—अथ किं चरहि ते, भन्ते, देवदत्तो ब्याकतो—आपायिको देवदत्तो, नेरयिको देवदत्तो, कप्पट्ठो देवदत्तो, अतेकिच्छो देवदत्तो ति? ताय च पन ते वाचाय देवदत्तो कुपितो अहोसि अनत्तमनो ति। इमं खो ते, राजकुमार, समणो गोतमो उभतोकोटिकं पञ्हं पुट्ठो समानो नेव सक्खिति उग्गिलितुं न सक्खिति ओगिलितुं। सेय्यथापि नाम पुरिसस्स अयोसिङ्घाटकं कण्ठे विलग्गं, सो नेव सक्कुणेय्य उग्गिलितुं न सक्कुणेय्य ओगिलितुं;

अभय राजकुमार ने अच्छा अच्छा स्वादिष्ट एवं मनोनुकूल भोजन भगवान् को अपने हाथ से परोसा। इसके बाद, अभय राजकुमार, भगवान् को भोजन पूर्ण कर पात्र से हाथ हटाया हुआ जान, एक नीचा आसन ले एक ओर बैठ गया।

३. एक ओर बैठे अभय राजकुमार ने भगवान् से यों पूछा—''भन्ते! (कभी) आप ऐसी वाणी भी बोलते हैं, जो दूसरों को दुःखद एवं अप्रिय लगे?''

''राजकुमार! यह बात बिना अपवाद के सर्वथा, एकान्ततः (इकतरफा) नहीं कही जा सकती।''

''भन्ते! इस पर तो निर्ग्रन्थ मारे गये!''

''अरे, राजकुमार! यह क्या कह रहे हो कि 'भन्ते! निर्ग्रन्थ मारे गये?'

एवमेव खो ते, राजकुमार, समणो गोतमो इमं उभतोकोटिकं पञ्हं पुट्ठो समानो नेव सक्खिति उग्गिलितुं न सक्खिति ओगिलितुं' '' ति।

२. अनुकम्पाय अप्पियं पि भासेय्य

[N.70] ४. तेन खो पन समयेन दहरो कुमारो मन्दो उत्तानसेय्यको अभयस्स राजकुमारस्स [R.395] अङ्के निसिन्नो होति। अथ खो भगवा अभयं राजकुमारं एतदवोच—''तं किं मञ्ञसि, राजकुमार, सचायं कुमारो तुय्हं वा पमादमन्वाय धातिया वा पमादमन्वाय वा कट्ठं वा कठलं वा मुखे आहरेय्य, किन्ति नं करेय्यासी'' ति?

''आहरेय्यस्साहं, भन्ते! सचे, भन्ते, न सक्कुणेय्यं आदिकेनेव आहत्तुं, वामेन हत्थेन सीसं परिग्गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन वङ्कङ्गुलिं करित्वा सलोहितं पि आहरेय्यं। तं किस्स हेतु? अत्थि मे, भन्ते, कुमारे अनुकम्पा'' ति।

''एवमेव खो, राजकुमार, यं तथागतो वाचं जानाति अभूतं अतच्छं अनत्थसंहितं सा च परेसं अप्पिया अमनापा, न तं तथागतो वाचं भासति। यं पि तथागतो वाचं जानाति भूतं तच्छं अनत्थसंहितं सा च परेसं अप्पिया अमनापा, तं पि तथागतो वाचं न भासति। यं च खो तथागतो वाचं जानाति भूतं तच्छं अत्थसंहितं सा च परेसं अप्पिया अमनापा तत्र [B.58] कालञ्ञू तथागतो होति तस्सा वाचाय वेय्याकरणाय। यं तथागतो वाचं जानाति अभूतं अतच्छं अनत्थसंहितं सा च परेसं पिया मनापा, न तं तथागतो वाचं भासति। यं पि

''भन्ते! (कल) मैं निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र के पास गया था....पूर्ववत्[1]....और न निगल सकेगा।''

२. कृपा के कारण दोषी को अप्रिय भी कहना पड़ता है

४. उस समय एक छोटा बच्चा अभय राजकुमार की गोद में बैठा था। तब भगवान् ने अभय राजकुमार से यह पूछा—''तो क्या मानते हो, राजकुमार! यदि यह छोटा बच्चा तुम्हारी या धातृ (धाय, दाई) की भूल (गलती) से कोई काठ या काठ का टुकड़ा मुँह में डाल ले तो तुम क्या करोगे?''

''भन्ते! मैं उसे पुनः निकाल लूँगा। भन्ते! यदि मैं उसे आरम्भ में सरलता से निकाल पाया तो बायें हाथ से इस (बच्चे) का सिर पकड़ कर, दायें हाथ की अँगुली टेढ़ी कर उसे निकाल लूँगा, भले ही ऐसा करते समय उसके मुख से खून ही क्यों न बहने लगे। वह क्यों? वह इसलिये, भन्ते! कि कुमार से मुझे प्यार (=अनुकम्पा) है।''

''इसी तरह राजकुमार! (१) तथागत जिस बात के विषय में जानते हैं कि यह हुई ही नहीं है, अतथ्य है, कहने पर अनर्थ (हानि) युक्त है, जो बोले जाने पर दूसरों को कष्टकर एवं अप्रिय लग सकती है, ऐसी बात (वाणी) तथागत नहीं बोलते। (२) तथागत जिस बात के विषय मे जानते है कि यह हुई है, तथ्य (सत्य) है, अनर्थयुक्त है और जो बोलने पर दूसरों को कष्टकर या अप्रिय लगे, तथागत ऐसी वाणी भी नहीं बोलते। (३) हाँ, जिस बात के विषय में तथागत जानते हैं कि यह हुई है, तथ्य है, कहने पर अर्थ (लाभ) युक्त ही होगी, भले ही वह दूसरो को कष्टकर या अप्रिय लगे, समय पड़ने पर तथागत ऐसी वाणी बोल ही देते हैं। (४) परन्तु जिस वाणी के विषय में तथागत जानते हैं कि जो हुई ही न हो, अतथ्य हो, अनर्थयुक्त हो, भले ही वह दूसरों को सुखद या प्रिय लगे, ऐसी वाणी तथागत नहीं बोलते। (५) और जिस बात के विषय मे तथागत जानते हैं कि यह हुई तो अवश्य है, सत्य भी है, परन्तु कहने पर सामने वाले का अनर्थ (हानि) कर सकती है, अतः दूसरो को सुनने में

---

१. द्र०—इसी सूत्र का पहला उपबन्ध (पैरा)।

तथागतो वाचं जानाति भूतं तच्छं अनत्थसंहितं सा च परेसं पिया मनापा तं पि तथागतो वाचं न भासति। यं च तथागतो वाचं जानाति भूतं तच्छं अत्थसंहितं सा च परेसं पिया मनापा, तत्र कालञ्ञू तथागतो होति तस्सा वाचाय वेय्याकरणाय। तं किस्स हेतु? अत्थि, राजकुमार, तथागतस्स सत्तेसु अनुकम्पा'' ति।

३. ननु ठानसोवेतं तथागतं पटिभाति

५. ''ये मे, भन्ते, खत्तियपण्डिता पि ब्राह्मणपण्डिता पि गहपतिपण्डिता पि समणपण्डिता पि पञ्हं अभिसङ्खरित्वा तथागतं उपसङ्कमित्वा पुच्छन्ति, पुब्बेव नु खो, भन्ते, भगवतो चेतसो परिवितक्कितं होति—'ये मं उपसङ्कमित्वा एवं पुच्छिस्सन्ति तेसाहं एवं पुट्ठो एवं ब्याकरिस्सामी' ति, उदाहु ठानसोवेतं तथागतं पटिभाती'' ति? [N.71]

''तेन हि, राजकुमार, तञ्ञेवेत्थ पटिपुच्छिस्सामि, यथा ते खमेय्य तथा नं ब्याकरेय्यासि। तं किं मञ्ञसि, राजकुमार, कुसलो त्वं रथस्स अङ्गपच्चङ्गानं'' ति?

''एवं, भन्ते, कुसलो अहं रथस्स अङ्गपच्चङ्गानं'' ति।

''तं किं मञ्ञसि, राजकुमार, ये तं उपसङ्कमित्वा एवं पुच्छेय्युं—'किं नामिदं रथस्स अङ्गपच्चङ्गं' ति? पुब्बेव नु खो ते एतं चेतसो परिवितक्कितं अस्स 'ये मं उपसङ्कमित्वा एवं पुच्छिस्सन्ति तेसाहं एवं पुट्ठो एवं ब्याकरिस्सामी' ति, उदाहु ठानसोवेतं [R.396] पटिभासेय्या'' ति?

''अहं हि, भन्ते, रथिको सञ्ञातो कुसलो रथस्स अङ्गपच्चङ्गानं। सब्बानि मे रथस्स अङ्गपच्चङ्गानि सुविदितानि। ठानसोवेतं मं पटिभासेय्या'' ति।

भले ही वह सुखकर या प्रिय लगे तो भी तथागत ऐसी वाणी नहीं बोलते! (६) और जिस वाणी के विषय में तथागत जानते हैं कि यह हुई भी है, तथ्य भी है, कहने पर सामने वाले का लाभ ही करेगी और दूसरों को सुखद या प्रिय ही लगेगी, उसे तथागत अवसर आने पर बोल ही देते हैं। वह क्यों? राजकुमार! वह इसलिये कि तथागत के मन में प्राणियों के प्रति अत्यन्त अनुकम्पा रहती है।''

३. तथागत अवसर आने पर ही सोचकर बोलते हैं

५. ''भन्ते! ये जो क्षत्रिय, ब्राह्मण, गृहपति व श्रमण विद्वान् अपना अपना प्रश्न सोचकर, आपके पास आकर पूछते हैं, तब क्या आपके मन में पहले से यह बात आ जाती है कि 'जो मुझसे ऐसा आकर पूछेंगे, उन्हें मैं ऐसा पूछे जाने पर ऐसा उत्तर दूँगा', अथवा अवसर आने पर ही आप वैसा उत्तर सोच लेते हैं?''

''तो राजकुमार! मैं तुमसे ही पूछना चाहता हूँ, तुम जैसा उचित समझो, वैसा उत्तर दो। तो क्या मानते हो, राजकुमार! तुम रथ-सञ्चालन की छोटी बड़ी सभी बातें भलीभाँति जानते हो?''

''हाँ, भन्ते! मैं रथ-सञ्चालन की छोटी बड़ी सभी बातें भलीभाँति जानता हूँ।''

''तो क्या मानते हो, राजकुमार! कोई तुम्हें आकर यह पूछे - 'ये रथ की छोटी-बड़ी बातें क्या है?' ऐसे अवसर पर क्या तुम पहले से सोचे रहते हो कि कोई मुझसे आकर ऐसा पूछेगा तो ऐसा पूछने पर उसे ऐसा उत्तर दूँगा या प्रश्नकाल के बाद ही तुम्हे जैसे उचित लगता है, वैसा उत्तर दे देते हो?''

''भन्ते! मैं रथिक हूँ, रथ सञ्चालन में चतुर हूँ। मे रथ के विषय मे उसकी सभी छोटी बडी

''एवमेव खो, राजकुमार, ये ते खत्तियपण्डिता पि ब्राह्मणपण्डिता पि गहपतिपण्डिता पि समणपण्डिता पि पञ्हं अभिसङ्खरित्वा तथागतं उपसङ्कमित्वा पुच्छन्ति, ठानसोवेतं तथागतं पटिभाति। तं किस्स हेतु? सा हि, राजकुमार, तथागतस्स धम्मधातु सुप्पटिविद्धा यस्सा धम्मधातुया सुप्पटिविद्धत्ता ठानसोवेतं तथागतं पटिभाती'' ति।

६. एवं वुत्ते, अभयो राजकुमारो भगवन्तं एतदवोच—''अभिक्कन्तं, भन्ते, अभिक्कन्तं, भन्ते....पे०....अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतं'' ति।

अभयराजकुमारसुत्तं निट्ठितं॥

सूक्ष्मताएँ (बारीकियाँ) भलीभाँति जानता हूँ। अतः प्रश्नकाल के तत्काल बाद ही इसका उचित उत्तर मेरे मन में आता है, पहले से नहीं।''

''इसी तरह, राजकुमार! ये जो क्षत्रिय, ब्राह्मण....पूछते हैं, पूछने के तत्काल बाद ही मन में आता है कि मैं इसका ऐसा उत्तर दूँ। वह क्यों? राजकुमार! वह इसलिये कि तथागत की में सोचने की विधि सर्वथा निश्चित है, जिसके कारण तथागत अवसर आते ही उचित उत्तर दे हैं।''

६. ऐसा कहे जाने पर, अभय राजकुमार ने भगवान् से यों निवेदन किया—''आश्चर्य है, भन्ते! अद्भुत है, भन्ते....पूर्ववत्[1]....आज से जीवनपर्यन्त मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।''

अभयराजकुमारसूत्र समाप्त॥